प्रातः क्लास ओमशान्ति - शिवबाबा याद है? 11-2-69

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। रूहानी बाप भी कर्मेन्द्रियों से बोलते हैं, रूहानी बच्चे भी कर्मेन्द्रियों से सुनते हैं। यह है नई बात। दुनिया में और कोई मनुष्य ऐसे कह न सके। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही समझते हैं। जैसे टीचर पढ़ाते हैं तो स्टुडन्ट का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार रजिस्टर शो करता है। रजिस्टर से उनकी पढ़ाई और चलन का पता पड़ जाता है। मूल है ही पढ़ाई और कैरेक्टर। यह तो है ईश्वरीय पढ़ाई जो कोई पढ़ा न सके। रचता और रचना के आदि, मध्य अन्त के सृष्टि चक्र की नालेज है। यह तो कोई भी मनुष्य सारी दुनिया में नहीं जानते हैं। ऋषि-मुनि जो इतने पढ़े-लिखे अर्थाटी होते हैं वह प्राचीन ऋषि-मुनि खुद कहते हैं हम रचता और रचना को नहीं जानते हैं तो नास्तिक ठहरे ना। तुम भी रचता को थोड़े ही जानते थे। बाप को ही आकर अपनी पहचान देनी पड़ी। गाया भी जाता है यह है कांटों का जंगल। जंगल को आग जरूर लगती है। गुल2 बगीचे को कब आग नहीं लगती क्यों कि जंगल सारा सूख जाता है, बगीचा गीला होता है। गीले को आग नहीं लगती। सूखे जंगल को आग झट लग जायेगी। बगीचे को आग लगे, ऐसा कब सुनेंगे नहीं होंगे। तो यह भी बेहद का जंगल है। इनको आग तब लगी थी जब बगीचा की स्थापना हो गया था। बगीचा अभी गुप्त स्थापन हो रहा है। तुम जानते हो हम बगीचे के फूल खुशबूदार देवता बन रहे हैं। उनका नाम ही है स्वर्ग। इनमें तो कितनी बदबूयें हैं। नाम ही है नर्क। वेश्यालय। तुम कहां भी प्रदर्शनी आदि में स्वर्ग और नर्क या बगीचा और जंगल पर समझाये सकते हो। बन्डर है तुम कितना समझाते हो फिर भी बुधि में नहीं बैठता। जो इस धर्म के ही नहीं होंगे तो उनकी बुधि में बैठेगा ही नहीं। एक कान से सुना दूसरे से निकला। सतयुग-त्रेता में भारतवासी कितने थोड़े होंगे। फिर द्वापर कलियुग में वृधि हो जाती है। वहां एक बच्चा, यहां फिर 4-5 बच्चे। तो वृधि होती जाती है ना। भारतवासी ही जो अभी हिन्दू कहलाते हैं वास्तव में देवता धर्म के थे। और कोई भी अपने धर्म को नहीं भूलते हैं। यह भारतवासी ही है जो अपने धर्म को भूलते हैं। तो कितनी वृधि हो जाती है। इतने सब ढेर मनुष्य सब तो ज्ञान नहीं ले सकेंगे। तुम एक अपनी अवस्था को भी समझ सकते हो। हमने भक्ति कितनी की है। थोड़ी भक्ति की है तो ज्ञान भी थोड़े ही उठायेंगे। बहुत भक्ति की है तो बहुतों को उठायेंगे। बहुतों को समझायेंगे। ज्ञान नहीं उठा सकते तो समझो भक्ति भी थोड़ी की है। फल भी थोड़ा मिलता है। हिसाब है ना। बाबा को एक बच्चे नेऔर धर्म वालों के जन्मों का भी हिसाब निकाल भेजा था कि इस्लामी के इतने जन्म, बौधियों के इतने जन्म होने चाहिए। बुध भी धर्मस्थापक हैं। उनके पहले कोई तो बुध था नहीं। एक में बैठ प्रवेश कर धर्म स्थापन किया। फिर एक से वृधि होती है। यह भी एक प्रजापिता है। एक से कितने वृधि होते हैं। तुमको तो राजा बनना है नई दुनिया में। यहां तुम बनता में हो। शोक नहीं करना चाहिए। हम अच्छे कपड़े डाक्टरान के पहने। अच्छी साड़ी पहने। यह सब देहाभिमान है। जो मिला सो अच्छा। इस दुनिया में बाकी थोड़ा रोज़ रहना है। यहां ऊंचे कपड़े पहनेंगे तो फिर वहां कर्म हो जायेगा। यह पहनूं, यह करूं, यह भी छोड़ना पड़े। आगे चल तुम बच्चों को आपे ही सा0 होते रहेंगे। तुम गुप्त कहेंगे यह तो बहुत सर्विस करते हैं। कमाल है। यह जरूर ऊंच नम्बर लेगा। फिर आप समान भी बनाते रहते हैं। दिन प्रति दिन बगीचा तो बड़ा होने का है। जितने भी देवी-देवतायें सतयुग में त्रेता के हैं वह सब गुप्त यहां बनते हैं। फिर प्रत्यक्ष हो जायेंगे। अभी तुम गुप्त पद पा रहे हो। तुम जानते हो हम पढ़ते हैं मृत्युलोक में, पद फिर अमरलोक में पायेंगे। ऐसी पढ़ाई कब देखी। यह बन्डर है ना। पढ़ना पुरानी दुनिया में, पद नई दुनिया में पाना। पढ़ाने वाला भी वही है जो अमरलोक की स्थापना, मृत्युलोक का विनाश कराने वाला है। बन्डरफुल बात है ना। तुम्हारा यह है पुरुषोत्तम संगम युग। यह युग बहुत छोटा होता है। इनमें ही बाप आते हैं पढ़ाने लिए। आने से ही पढ़ाई शुरू हो जाती। तब ही बाबा कहते हैं शिव जयन्ति सो गीता जयन्ति। मनुष्य थोड़े ही जानते हैं।

उन्हों ने तो कृष्ण सांवरा का नाम रख दिया है। अभी जब यह भूल कोई समझे। कितने बड़े2 आदमी मुलाकात में आते हैं, ऐसे नहीं कि वह बाप को पहचान लेते हैं। बिलकुल ही नहीं। इसलिए फर्क भराना चाहिए तो मालूम पड़े कुछ सीखा है। बाकी यहां आकर क्या करेंगे। जैसे साधू महात्माओं के पास जाते हैं, यहां तो यह बात नहीं। इनका तो वही साधारणरूप है। वही ड्रेस आदि है। फर्क नहीं। इसलिए कोई समझ नहीं सकते। समझते हैं यह तो जवाहरी था, वह था विनाशी रत्नों का जवाहरी। अभी बने हैं अविनाशी ज्ञान रत्नों का जवाहरी। तुम सौदा भी बेहद के बाप से करते हो। जो बड़ा सौदागर, रत्नागर है। तुम हरेक आत्मा को समझो हम स्वयंवर हैं। हमारी आत्मा में ज्ञान की सहस्र लाख रुपये की है। वह भक्ति मार्ग के तो हैं पत्थर। गीता, भगवद-शास्त्र आदि जो पढ़ते हैं वह पढ़ते पत्थर ही पत्थर है। जिससे पत्थर बुधि ही बन जाते हैं। और यह ज्ञान रत्न सुनने से ही पारस बुधि बन जाते हैं। जितना शास्त्र आदि पढ़ते हैं उतना गिरते हो जाते हैं। उस में हैं ही झूठे पत्थर। उनको रत्न नहीं कह सकते। यह भी समझ की बात है ना। कोई जो अच्छे समझदार सयाने हैं वह समझ और धारण करते हैं, अगर धारणा नहीं होती तो कोई काम का नहीं। झोली में अ टूंग है तो सारा वह जाता है। बाप कहते हैं तुमको हम अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देते हैं। दान=जो देते रहेंगे तो भरपूर होते रहेंगे। नहीं तो कुछ भी धारणा नहीं होगी। पढ़ते ही नहीं। कायदे अनुसार चलते ही नहीं। इस में सबजेक्ट बहुत अच्छी चाहिए। 5 विकारों से बिलकुल दूर जाना है। तुम कर्मेन्द्रियों में बड़े अच्छे फर्स्ट क्लास थे। सब से पूछा जाता था तुम कितने रोटी खावेंगे। लिस्ट रहती थी। नियम अनुसार ही खाना चाहिए ना। अभी तो माया के हवाले कर देती है। बाप ने समझाया है त्योहार आदि जो मनाई जाती है वह सब इस समय के हैं। राखड़ी बन्धन भी अभी का है। मनुष्य इसका अर्थ थोड़े ही समझते हैं। कि राखड़ी क्यों बांधी जाती है। वह तो अपवित्र होने ही बांधते हैं। आगे ब्राह्मण लोग बांधते थे। अभी छोकड़ियां अपने भाई को बांधती है खर्ची के लिए। पवित्रता की तो बात ही नहीं। राखड़ियां भी देखो कैसी फैंसी बनाते हैं। तो यह दीपमाला, दशहरा आदि सब संगम युग के हैं। बाप ने जो स्थापना की है वह फिर भक्ति-मार्ग में चली आती है। बाप तुमको सच्ची गीता सुनाकर यह बनाते हैं। वह गीता तो जन्म-जन्मान्तर पढ़ते आते हो। क्या यह बनते हो। पढ़ते2 और ही थर्ड ग्रेड बन पड़े हो। फिर अभी तुम फर्स्ट ग्रेड में जाते हो। रत्नागर की कथा भी यह राजयोग हो गया। तुम नर से नारायण बनते हो। तो अब तुम बच्चों को सारी दुनिया को जगाना है। कितनी ताकत चाहिए। योग की ताकत से ही तुम कल्प2 स्वर्ग की स्थापना करते हो। योगबल से होती है स्थापना, बाहूं बल से होता है विनाश। अक्षर ही दो है। अलफ और बे। योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो। सांयस बल भी बाहूं का बल है। तुम्हारा ज्ञान बिलकुल ही गुप्त है। तुम जो सतोप्रधान थे सो अब तमोप्रधान बने हो। फिर अभी सतोप्रधान बनना है। हरेक चीज नई और पुरानी जरूर होती है। नई दुनिया में क्या नहीं होगा। पुरानी दुनिया में तो कुछ भी नहीं है। जैसे एकदम खोखा है। कहां भारत स्वर्ग, कहां भारत नर्क। रात-दिन का फर्क है। यह तो रावण राज्य है ना। रावण को जलाते हैं परन्तु अर्थ जरा भी नहीं समझते। अभी तुम समझते हो क्या2 करते रहते हैं। झाड़ की एक बिमारी होती है वह टुकड़ा लेकर पाग में रख ते हैं, कहते हैं हम लंका लूट कर आये हैं। इसको कहा जाता है अज्ञान। तुम्हारे में कल अज्ञान था, आज ज्ञान है। कल तुम नर्क में थे आज स्वर्ग में जा रहे हो। रियलिटी। ऐसे नहीं जैसे वह लोग सिर्फ कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। तुम स्वर्ग में चले जावेंगे फिर यह नर्क होगा ही नहीं। कितने समझने की बातें हैं। यह सब है सेकण्ड की बात। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। यह सभीको बतलाते रहो। बोलो तुम यह थे फिर 84 जन्म लेते2 यह बने हो। सतोप्रधान से तमोप्रधान बन गये हो फिर सतोप्रधान बनना है। आत्मा तो विनाश नहीं होती। बाकी उनको तमोप्रधान से सतोप्रधान तो फिर बनना

ही पड़े। बाबा किसम2 से समझाते रहते हैं। मेन बैटरी कब पुरानी होती नहीं। बाबा सिर्फ कहते हैं अपने को छोटी आत्मा समझो। कहते भी हैं इनकी आत्मा निकल गई। आत्मा संस्कारों अनुसार एक शरीर छोड़ दूसरा लेता है। सभी आत्माओं का अब वापस जाना है। यह भी ड्रामा है। सृष्टि का चक्र रिपीट होता रहता है। पिछाड़े में जितने मनुष्य होंगे उतनी आत्मायें जरूर। हिसाब निकालते हैं तो कहते हैं इतने मनुष्य हैं। ऐसे क्यों नहीं कहते इतनी आत्मायें हैं। बाप कहते हैं बच्चे मुझे कितने भूल गये हो। सभी का फिर मुझे ही कल्याण करना है। तब तो पुकारते हैं ना। तुम बाप को इतना नहीं समझते हो। तुम बाप को क्यों भूल जाते हो बाप थोड़े ही बच्चों को भूलेंगे। यह हो नहीं सकता। बाप आते ही हैं पतित आत्माओं को पावन बनाने। यह गऊमुख ठहरा ना। बैल की तो बात ही नहीं। यह भाग्यशाली रथ है ना। बाबा तुम बच्चों को भी कहते हैं शिव बाबा को हम श्रृंगारते हैं। यह पक्का याद रहे। शिव बाबा को याद करने से बहुत फायदा है। ब्रह्मा का नाम भी न लो। इसलिए बाबा, मम्मा का फोटो रखना भी बाबा पसंद नहीं करते। कब कब ख़याल आता है सब फोटो तोड़, फोड़ निकाल देवें। बाकी त्रिमूर्ति झाड़ में तो है ही। इनके द्वारा बाप पढ़ाते हैं। तो इनको थोड़े ही याद करना है। इनका फोटो तो कब भी लो नहीं। नहीं तो फंस मरेंगे। मम्मा की फोटो भी क्यों। भक्त लोग अपने गुरु का चित्र रखते हैं। यह कोई गुरु थोड़े ही है। गुरु तो शिवबाबा है। बलिहार उस पर ही जाना है। यह भी उन पर बलिहार गया ना। एक दिन यह मम्मा बाबा के फोटोज़ भी गुम कर देंगे। तुम सभी स्टुडन्ट हो ना। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। फिर यह फोटोज़ क्यों रखना चाहिए। वास्तव में मम्मा की फोटो रखना भी बेकायदे है। बहुतों ने मम्मा की पिछाड़ी पढ़ाई भी छोड़ दी। अपना बेड़ा ही गर्क कर दिया। मम्मा क्यों गई, यह क्यों गुजरा हुआ। अरे बाप कहते हैं शरीर गया सो तो सब का जाना है। कोई को भी रहना न है। "आज हम, कल तुम" हम पार्टधारी हैं। इसमें जरा भी संशय की बात नहीं। सभी खलास होंगे। यह तो जनावरों की दुनिया है। हम जाते हैं सतयुगी फूलों की दुनिया में। फिर कांटों में मोह क्यों होना चाहिए। 63 जन्म तुम भक्ति मार्ग के यह शास्त्र पढ़ते पूजा करते आये हो। पूजा भी पहले 2 तुम ने शिव की की है। तब ही तो तुम सोमनाथ का मंदिर बनाया है। मंदिर तो सभी राजाओं के घर में थे। कितने हीरे-जवाहर थे। पीछे आकर चढ़ाई की है। एक मंदिर से भी कितना ले गये। तुम ऐसे धनवान, विश्व के मालिक बनते हो। यह विश्व के मालिक थे ना। परन्तु इन्हों के राज्य को कितना वर्ष हुआ यह कुछ भी पता नहीं है। बाप कहते हैं 5000 वर्ष हुये हैं। 2500 वर्ष तो राज्य किया फिर बाकी 2500 वर्ष में इतने मठ-पंथ आद वृधि को पाते हैं। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। हमको बेहद का बाप पढ़ाते हैं। अथाह मिकीयत मिलती है। दिखाते हैं सागर से देवता निकल रत्नों की थाली भर कर देते हैं। अभी तुमको ज्ञान रत्नों की थाली भरपूर मिलती है। बाप ज्ञान का सागर है ना। कोई तो अच्छी रीत झोली भरते हैं कोई की रह जाती है। जो अच्छी रीत पढ़ेंगे पढ़ावेंगे वह जरूर अच्छा धनवान बनेंगे। राजधानी स्थापन होती है यह सब भी ड्रामा में नूंध है। जो अच्छी रीत पढ़ते हैं उनको ही स्कालरशिप मिलती है। यह है ईश्वरीय स्कालरशिप अविनाशी। यह है आसुरी विनाशी। सीढ़ी बड़ी वन्डरफुल है। 84 जन्मों की कहानी है। बाबा तो कहते हैं छत जितनी बड़ी सीढ़ी बनाओ। ऐसे ट्रान्सलाईट हो जो क्लीयर दिखाई पड़े। तो मनुष्य देख कर वन्डर खावे। फिर तुम्हारा नाम भी बाला होता जावेगा। अभी जो सिफ्सेरी पहन जाते हैं वह फिर आवेंगे। दो चार बारी फेरी पहन फिर तकदीरवान होंगा तो जम जावेंगे। शमा तो एक ही है। जावें कहां। बहुत मीठा भी बनना है। मीठा तब बनेंगे जब योग में होंगे। योग से ही कशिश होगी। यह सीढ़ी सभी आत्माओं को जाने की है। फिर उतरना है। जावेंगे फट से। फिर नम्बरवार आवेंगे। वन्डर है हिस्ट्री-जागरफी रिपीट कैसे होती है। किसने यह समझाया उनको तो याद करना चाहिए ना। ऐसे नहीं शिव बाबा चला गया फिर आवेगा नहीं। बाप तो ओमनीप्रजेन्ट है। वहां ओमनीप्रजेन्ट है माया। यहां बाप। ओम।